

१

कृषिकर्म और जैनधर्म

[लेखकः—श्री पं० शोभाचन्द्र भारिल्ल, न्यायतीर्थ.]

—:()::—

कृषिकर्म, जैनधर्म से विरुद्ध है या अविरुद्ध, इस बात का विचार करने से पूर्व यह देखना उचित होगा कि धर्म क्या है ? और जीवन में धर्म का स्थान क्या है ? क्या धर्म कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के लिए है या सर्वसाधारण के हित के लिए ? इन प्रश्नों पर सरसरी निगाह डालने से कृषिकर्म का जैनधर्म के साथ जो संबंध है, उसे समझना सरल हो जायगा ।

धर्म जीवन का अमृत है—जीवन का संस्कार है; अतएव वह जीवमात्र के हित के लिए है । धर्म का प्रांगण इतना विशाल है कि उसमें किसी भी प्राणी के लिए स्थान की कमी नहीं है। यह बात दूसरी है कि कोई धर्म की छत्रछाया में न जावे और उससे अलग ही रहने में अपनी भलाई समझे; मगर धर्म किसी को अपनी शीतल छाया में आने से नहीं रोकता ।